रविवार, दिनाँक 24-03-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।

आ आ आ आ आ, कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।।

इस रंग दा पाया श्री राम जी ने बाना, जगत देख होवे मस्ताना।

ए रंग धुर दा आया, कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।।

इस बाने ने साजन जी नूं है ओ सजाया, नाले हनुमान जी ने वी पाया।

ए रंग धुर दा आया, कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।।

ए रंग इलाही आया, ए रंग पातशाही आया।

ए रंग कोई विरला जाणे, ए रंग कोई विरला पछाणे।।

ठीक हो सारे? केवल गाते ही न रहो अपितु हक़ीकत में उस ईश्वर के इलाही रंग में रंग भी जाओ, ताकि खुद को व सबको सुन्दर व प्रिय लगो। जानो इस हेतु प्रयास तो करना ही पड़ेगा क्योंकि वर्तमान में हमारी सुरत/ख़्याल कलुकाल के प्रभाव से बेरंग हुआ पड़ा है। अतः उसे एकता के प्रतीक उस इलाही रंग में रंगने हेतु, जो सर्व एकात्मा का दर्शन कराता है, संसार से समेटकर, ओ३म् आद् अक्षर में स्थित करना होगा। सजनों बस इतना सा बदलाव आपकी सुरत/ख़्याल को इस प्रकार इलाही रंग में रंग देगा कि आप आत्म-विभोर हो उठोगे और आपको जीवन का वास्तविक आनन्द आ जाएगा क्योंकि तब अन्तर्घट में आत्मीयता/सज्जनता का भाव जाग्रत हो जाएगा। इसके जाग्रत होते ही, संसार में निर्लिप्तता से विचरने की युक्ति की समझ आ जाएगी। इस तरह जगत में रहते हुए भी उससे निर्लेप बने रह सकोगे। सजनों यह कोई लम्बी बात नहीं है अपितु सूक्ष्म बात है। अगर सूक्ष्म अन्दर हमारा ख़्याल प्रवेश करे तो उसके लिये फिर सूक्ष्म युक्ति ही चलती है। सजनों सुनिश्चित रूप से इस कारज में आपको सफलता हासिल हों, उसके लिए अविलम्ब शारीरिक मोह त्यागना होगा। चाहे ऐसा करना अति कठिन ही क्यों न प्रतीत हो परन्तु फिर भी अपने व सबके हितार्थ ऐसा करना होगा। यकीन मानो अगर इस मोह को त्यागकर

अपने संग प्यार करोगे तो निःसन्देह आप 'अपना आप' जान जाओगे और आत्म-स्थित रहने के लिए हर क्षण कुछ भी कुर्बान करने के लिए तत्पर हो जाओगे। अतैव यदि जीवन का आनन्द लेना चाहते हो तो थोड़ा ऐसा परिवर्तन अपने में ले आओ। जानो यह कोई दुनियांवी बात नहीं है अपितु यह तो परमार्थ बनने की बात है। अब ध्यान से सुनोः-

रंगन वालिया रंगीला सोहणा रंग रंग दे, ऐसा रंग रंगीला रंगीं लोकी दंग कर दे।

रंग रंगाया ध्रुव प्रहलाद, दर्शन दिता ए महाराज।

उन्हां दे सिर ते रखया ताज, ओहो रंग रंग दे।।

सुदामा द्वारका विच जावे, कृष्ण चरणां दी धूरि उड़ावे।

वस्त्र आप बैठ पहनावे, ओहो रंग रंग दे।।

रंग रंगाया धन्ने जट, रधुनाथ जी आ गये झट पट।

होये पत्थरों प्रगट, ओहो रंग रंग दे।।

रंग रंगाया मीरांबाई, प्रीति चरणां विच लगाई।

दर्शन दिता ए रघुराई, ओहो रंग रंग दे।

रंग रंगाया श्री हनुमान, उन्हां नू मिल गये श्री भगवान।।

अपने चरणां विच बिठान, ओहो रंग रंग दे।।

सुग्रीव विभीषण रंग रंगाया, महाबीर जी ने उन्हां नू मन्त्र सिखाया।

रघुनाथ जी ने राज तिलक दिलवाया, ओहो रंग रंग दे।।

दासी नू ओहो रंग रंगा दे, प्रेम भक्ति अपनी सिखला दे।

प्रीति चरणां विच बढ़ा दे, ओहो रंग रंग दे।।

ज्ञात हो सजनों सच्चेपातशाह जी परमार्थ पथ पर अग्रसर होते हुए, जब बहिर्मुखता छोड़ अन्तर्मुखी हो गये तो स्वतः ही उनके मन से 'अहं भाव' का विसर्जन हो गया और दासी भाव का उद्‌भव हो गया। इस तरह उन्होंने दासी भाव/धर्म स्वीकार लिया। दासी का भाव या धर्म सजनों होता है - स्वामी की हर आज्ञा का निष्कामता से पालन करना। इस तरह दासी भाव में आ उन्होंने धर्म-संगत 'आत्मा में जो सुशोभित है परमात्मा', उनके वचनों का पालन करना आरम्भ कर दिया और उन पर स्थिरता से डटे रहने के लिये तथा कलुकालवासियों को भी इसके प्रति प्रोत्साहित करने के लिये कहा कि हे सुरतो ! जो 'आत्मा में परमात्मा' है, उसकी दासता स्वीकार लो। स्पष्ट है कि उन्होंने औरों की/संसार की दासता नहीं स्वीकारी अपितु उन्होंने तो उस एक प्रभु/परमेश्वर की ही दासता स्वीकारी व उन्ही के ही हो गये।

जानो इस भजन में जिस रंग में रंगने का वर्णन किया गया है, वह रंग अपने आप में इलाही रंग है। जिस किसी सुरत पर भी यह रंग एक बार चढ़ जाता है तो फिर नहीं उतरता। इस तरह वह सुरत विषमता का त्याग कर सम अवस्था में स्थिर हो जाती है। ऐसा होने पर आत्मा परमात्मा का भेद समाप्त हो जाता है और ऐक्य भाव स्थापित हो जाता है। फिर इस भजन द्वारा आप सबको प्रोत्साहित करने के लिए, कई प्रसिद्ध ऐसी हस्तियों का ज़िक्र भी किया गया है जिन्होंने ईश्वरीय रंग में स्वयं को रंगने का पराक्रम दिखाया। अतैव इस भजन को सुनने-समझने के उपरान्त खुद को भी उन सम जान ईश्वरीय रंग में रंगने का अदम्य साहस दिखाओ। इस हेतु मानो कि आप भी उन्हीं जैसे इन्सान हो, आपकी आत्मा में भी उन्हीं की भान्ति परमात्मा शोभित है, बस आवश्यकता केवल उस एक के प्रति अपनी सुरत को समर्पित करने की है। यहाँ याद रखो जगत अनेक का नाम है परन्तु वह परामत्मा एक है। अतः सुरत को सदा उस एक संग जोड़े रख, अपने सच्चे घर में स्थित रहो। मानो इसी में ही आपकी आन-बान व शान है। इसके विपरीत अगर सुरत बेघर हो गई तो यह अति शर्म की बात होगी? क्या इस प्रकार शर्मसार होना शोभा देता है।

'नहीं जी'।

जानो सबकी सुरत स्त्री है यानि इसमें स्त्री-पुरुष का कोई सवाल नहीं क्योंकि सब सम है यानि बराबर हैं। इस खेल में सब स्त्रियाँ हैं। इस परिप्रेक्ष्य में जैसे घर की स्त्री यदि बेघर

हो जाए तो वह कुलटा कहलाती है, उसी तरह यदि सुरत रूपा स्त्री संसार संग प्रीत जोड़ बैठे और निघर हो जाए तो वह भी पथभ्रष्ट कहलाती है और निन्दा का पात्र बनती है। क्यों नही सजनों आप इस बात की समझते? इस तथ्य के दृष्टिगत हमारे लिए बनता है कि हम सुरत रूप में सदा पवित्रता और सार्थकता के प्रतीक बने रहें। इस तरह हमारे ख़्याल में कोई निरर्थक बात न आये और हम जीवन में जो भी करें वह निष्काम भाव से ही करें। आशय यह है कि हम सेवा के निमित्त समर्पित होकर अपने व जगत उद्धार हेतु जो भी करें वह अर्थपूर्ण व सर्वहितकारी हो। जानो यदि ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में समर्थ हो गए तो सुरत चमक उठेगी। जब सुरत चमक उठी तो मान लेना कि अब हमारी मानसिक शक्ति हर तरफ से मजबूत है। अब हमारे लिए योग-अवस्था में सधे रहना यानि शौह के साथ बने रहना कोई कठिन बात नहीं है। मानो इसी योग में ही हमारी शान है। सजनों अपनी शान जो कि यश-कीर्ति का ज़रिया है, उस पर स्थिरता से बने रहना चाहते हो तो स्वयं पर कृपा कर परमार्थ का विचारयुक्त रास्ता स्वीकार लो और परमपिता परमात्मा कहो या सुरत का शौह कहो, उसकी हर आज्ञा का निर्विरोध पालन करना अपना प्रथम कर्त्तव्य मानो। आपकी जानकारी हेतु प्रभु की आज्ञाओं का वर्णन सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसकी जानकारी इस ग्रंथ में न हो। अतः इस ग्रंथ का अध्ययन करो और समझो कि मै कहाँ पर उलझा हुआ हूँ या शास्त्र विपरीत चल रहा हूँ। इस प्रकार हर समस्या का समाधान इस शास्त्र में से खोज निकालो और हर उलझन से सहज ही बच जाओ। यकीन मानो ऐसा उद्यम दिखाने से, अपने जीवन को सही दिशा प्रदान कर, आत्म-नियन्त्रण रखने में समर्थ हो जाओगे। आत्म-नियन्त्रण सध गया तो आत्म-निर्भर हो जाओगे। फिर कोई भी आपको गुमराह नहीं कर सकेगा। जानो गुमराह तो वही होता है जिसका मस्तिष्क कमजोर होता है। मस्तिष्क के कमजोर होने का पता संकल्प-विकल्पों के उठने से लगता है। संकल्प-विकल्प उठते हैं तो मान लो कि हम मानसिक रूप से कमजोर हैं और कोई भी हमें भरमा कर उलझा सकता है। आजकल अधिकतर ऐसा ही हो रहा है क्योंकि हमें विरासत में आत्मज्ञान नहीं मिला। पर कुदरत ने तो इतने वर्षों से आपको आत्मज्ञान प्राप्त करने का साधन बख़्शा हुआ है। इस विषय में सजनों जिसने बनत बनाई उस कुदरत की अनसुनी करना महान लापरवाही है और बर्बादी का कारण है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों शास्त्र को इस गहराई से पढ़ो ताकि जो भी आपके अन्दर परमार्थ के रास्ते पर चलने के प्रति मनमत प्रदत्त कठिनाईयाँ हैं, उस एक-एक कठिनाई का समाधान शास्त्र में कहाँ-कहाँ पर वर्णन है, आप उसे जानने-समझने में निपुण हो जाओ और ए विध हर परेशानी से बच जाओ। इस संदर्भ में मानो कि अभी भी आप भाव-परिवर्तन कर सकते

हो। इस भाव-परिवर्तन द्वारा संसारी रंग साफ हो जायेगा और इलाही रंग चढ़ जायेगा और फिर कह उठोगेः-

जोत तेरी तूं जोत दा वाली ओय, हर अन्दर तेरी जोत दी लाली ओय।

सारे जगत विच जापदा, नज़ारा देखे ओ राम दे राज दा।।

बाग़ तेरा तूं बाग़ दा माली ओय, हर अन्दर तेरी जोत निराली ओय।

सारे जगत विच साजदा, नज़ारा देखे ओ राम दे राज दा।।

किरण है जोत, जोत किरण तुम्हारी ओय, हर अन्दर तेरी जोत बनवारी ओय।

इस तरह फिर सर्व-व्यापक भगवान मानते हुए सबके साथ सजन भाव का व्यवहार करोगे। मानो सजनों यह कोई कठिन काम नहीं है बल्कि सबसे आसान काम है। संसारी रस में उलझकर, बेपरवाह बनकर व विषयों में फँसकर हमने स्वयं इसको कठिन बनाया हुआ है। अतः समय लगाओ और अपने सजन आप बन जाओ। अब ध्यानपूर्वक कीर्तन सुनोः-

जपो बली दे प्यारे दा जाप नज़र आंवे तुंही तुंही, तुंही तुंही हां हां तुंही तुंही।

जपो बली दे प्यारे दा जाप नज़र आंवे तुंही तुंही।

नाम दा है प्रकाश साडे मिटे सारे संताप, हां हां मिटे सारे संताप।

नज़र आंवे तुंही तुंही, तुंही तुंही हां हां तुंही तुंही।

महाबीर जी पूरण मिल गये मिट गये तीनों ताप, हां हां मिट गये तीनों ताप।

नज़र आंवे तुंही तुंही, तुंही तुंही हां हां तुंही तुंही।

नाम दा मींह बरसे ह्रदय होवे साफ़, हां हां ह्रदय होवे साफ़।

नज़र आंवे तुंही तुंही, तुंही तुंही हां हां तुंही तुंही।

बिन तेलों बिन वटों जोत जगे दिन रात हां हां जोत जगे दिन रात।

नज़र आंवे तुंही तुंही, तुंही तुंही हां हां तुंही तुंही।

कई चन्द्रमा दे चन्द्र किरणा छोड़ियां सूरज चढ़े हज़ार, हां हां सूरज चढ़े हज़ार।

नज़र आवें तुंही तुंही, तुंही तुंही हां हां तुंही तुंही।

रूप नहीं ओथे रंग नहीं नज़र आवे तू आप, बलधारी दा प्रताप।

नज़र आंवे तुंही तुंही, तुंही तुंही हां हां तुंही तुंही।

किश्ती तैयार किश्ती तैयार।

महाबीर दियां दासियां, चढ़ो ते उतरो समुन्द्रों पार।

पंज तत्त घर अपने जाओ जीव विचारे तों उतरम भार उतरम भार।

महाबीर दियां दासियां, चढ़ो ते उतरो समुन्द्रों पार।

सजनों आप सभी इस बात को मानोगे कि अभी आप सजनों की सुरत संसार सागर में गोते खा रही है यानि मन में ऐसी अशान्ति फैली है कि न तो आपको दिन में चैन और न ही रात को आराम है। इस निम्न परिस्थिति से उबरने के लिये सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की दासियो यानि सुरतो ! उनकी शास्त्रविहित् आज्ञा का पालन करो। सजनों वैसे तो वह यह बात पूरे संसार को ही कहते हैं परन्तु विशेषकर उन सजनों को कहते हैं जोकि द्वारे से जुड़े हुए हैं। अब जब आप द्वारे पर हो तो उनके परिवार के ही सदस्य हो। यह भी आपको पता है कि इस परिवार के पिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत हम सुरत रूपी बच्चों के लिये बनता है कि हम उनकी हर आज्ञा का पालन निष्काम भाव से करें और इस तरह अपने मन-मस्तिष्क का विकास उनके वचनों अनुसार करें।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जब कभी आप माता-पिताओं का बच्चा कहना न माने तो आपको कैसा अनुभव होता है?

बुरा।

ऐसे में यदि हम अपने परमपिता की आज्ञा का पालन नहीं करते तो उनको कैसा लगेगा?

मौन

यहाँ हमें समझ नहीं आता कि जब हम सजन अपने पिता की आज्ञा का पालन नहीं करते तो कैसे यह चाहते हैं कि हमारी सन्तानें हमारी आज्ञा का पालन करें? इस बात पर विचार करो और आगे से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना का दृढ़ संकल्प लो।

इस विषय में सजनों सबसे पहले सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि उस नाम को जपो जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से मिला हुआ है। यह आरम्भ है, पहला वचन है, अब देखो व परखो कि क्या वचनों की पालना हो रही है या नहीं? अगर नहीं हो रही तो हम मनमत पर हैं, यह सीधा और स्पष्ट परिणाम है। आशय यह है कि हम गुरुमत पर नहीं हैं। इस बात पर विचार करो तो परिणाम समझ आ जायेगा कि आपकी सुरत दुनियाँ में यानि अनेकों के साथ सम्बन्ध रखती है। अब सुरत रूपा स्त्री का अनेकों के साथ सम्बन्ध हो तो वह क्या कहलायेगी?

कुलक्षणी।

जी हाँ ऐसी कुलक्षणी जिसको स्त्रीत्व का पता ही नहीं कि जीवन यापन का सही तरीका क्या है और यह कहाँ से प्राप्त होगा? इस सन्दर्भ में शहनशाह कहते हैं कि हमारे इष्ट देव के साथ नाता जोड़ो। ध्यान दो कि वह यह नहीं कहते कि हमारे साथ नाता जोड़ो क्योंकि वह भी सेवक हैं। अतः उनकी आज्ञा अनुसार सजनों सब सुरतों के जो स्वामी है उन परमेश्वर के साथ ख़्याल का नाता जोड़ो ताकि आपकी नजरों में समभाव हो जाये और आप समदृष्टि हो जाओ। यहाँ हम तो यही कहेंगे कि उनका कहना मानो क्योंकि यह परिपूर्णतया ज्ञानमय अवस्था में आने की बात है यानि यह सुरत के लिए मैं क्या हूँ, यह

शरीर क्या है, ब्रह्म क्या है, यह जगत क्या है, इस सबको जानने की बात है। परिपूर्णतया ज्ञानमय अवस्था में आने का अर्थ है पूरी तरह से आत्मज्ञानी बन जाना। अब एक बार अगर आत्मज्ञानी की उपाधि मिल गई तो समझो कि अब संसार का कोई भी फुरना या संकल्प-विकल्प आपको परेशान कर अन्दर घर नहीं कर पाएगा यानि अफुर अवस्था आ जाएगी और घर सतयुग बन जाएगा क्योंकि सत्य का प्रकाश हो जाएगा। फिर जब हमारा हृदय सत्य के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है तो आत्म-दर्शन सुलभ हो जाएगा और मन में कई सूरजों का सूरज चढ़ जाएगा। परिणामतया इतने ओजस्वी व तेजस्वी हो जाओगे कि आपके समक्ष कोई भी ठहरने की हिम्मत नहीं कर पाएगा।

इस बात से सजनों समझ आती है कि कुदरत ने हमें इतना अधिक ताकतवर व सशक्त बनाकर जगत में भेजा है कि हम सहजता से जगत से आज़ाद रहते हुए, अपने जीवन लक्ष्य की सिद्धि कर सकते हैं। अतः हमारे लिए बनता है कि हमें जिस कार्य हेतु भेजा गया है, हम वैसा ही करें। ऐसा करने से ख़्याल आत्मस्थित हो जाएगा। जानो जब ख़्याल अपने स्वरूप में स्थित होता है तो हल्का होता है इसलिए जीवन की किश्ती समरस बहती है। इसके विपरीत जब ख़्याल/मस्तिष्क दुनियाँ में उलझता है तो बहुत भारी हो जाता है। तब किश्ती संकल्प-विकल्प की तरंगों के कारण कभी ऊपर तो कभी नीचे गोते खाती है यानि किश्ती डगमगाती रहती है। यकीन मानो इसी से परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं और परेशानियों में नादानियाँ तो होती ही होती हैं। इसके कारण जगतीय दृश्य के साथ हमारा मोह पड़ जाता है। केवल उनके साथ ही नहीं बल्कि इस शरीर के साथ भी मोह पड़ जाता है। फिर इसी शारीरिक सुन्दरता को हम सुन्दरता मानते हैं और सुरत की जो वास्तविक सुन्दरता है उस पर कभी विचार नहीं करते। इसलिए हमारी सुरत कंचन नहीं हो पाती। जबकि सच्चेपातशाह जी कहते हैं किः-

सुरत कंचन होवे, हो सुरत कंचन होवे,

फिर नाम ते ध्यान किवें न होवे।

सजनों जब सुरत कंचन होती है और नाम व ध्यान प्रकाश वल हो जाता है तो आत्म-दर्शन यानि अपनी यथार्थता को जानना सहज हो जाता हैं। इस तरह जीवन को यथार्थतापूर्ण

जीने के काबिल बन हम मोहपाश से मुक्त रहते हुए, जगत से आज़ाद हो जाते हैं जिसका मतलब होता है कि हमारा ख्याल इस शरीर से भी आज़ाद रहता है। अतः सजनों याद रखो कि इस शरीर रूपी मशीनरी की पालना अवश्य करनी है ताकि इसका इस्तेमाल करके हम अपने कर्त्तव्यों का समयबद्ध निष्कामता से निर्वहन कर सके पर इस संग मोह नहीं करना। ऐसा करने से हमें न तो इससे और न ही उससे यानि किसी दूसरे से मोह हो सकेगा। इसके स्थान पर हम तो सबसे प्रेम करेंगे क्योंकि सब समरस प्रतीत होंगे। अतः सजनों मानो सब, सब नहीं, सब हम यानि परमात्म स्वरूप हैं। जब सब हम हैं तो हम, हम से कैसे भिड़ सकता है? हम, हम की निन्दा कैसे कर सकता है? नहीं कर सकता। इस सन्दर्भ में कुल संसार का मोह त्यागने के प्रति सच्चेपातशाह जी कहते हैंः-

पंज तत्त घर अपने जाओ जीव विचारे तों उतरम भार उतरम भार।

सजनों हमें तो इस पाँच तत्त्व के शरीर से असीम प्यार है। इस भारी भरकम शरीर का बोझ उठाकर जीवन में चलता हुआ इन्सान थक जाता है। वास्तव में हम भी थककर बैठे हुए हैं। हम में भी आगे बढ़ने की हिम्मत नही हो रही। इसीलिए सच्चेपातशाह जी इस शरीर को कहते हैं कि 'पंज तत्त घर अपने जाओ'। उनके कहने के पीछे तात्पर्य यह है कि जो आत्मा शरीरबद्ध है, उससे भार उतरे। शरीर रूपी भार उतरा तो जीव आत्मा आज़ाद हो गया और मायातीत हो गया। याद रखो इस शरीर रूपी आवरण में है तो जीव मायाबद्ध है। माया का आवरण उतर गया यानि जीव मायातीत हो गया तो अपनी यथार्थता को प्राप्त हो गया। बस, फिर आगे और कुछ नहीं है।

जानो कि जब तक हमारा मोह इस पाँच तत्त्व के पुतले से नहीं छूटता तब तक हम जन्म-मरण के चक्र-व्यूह से आजाद नहीं हो सकते। मोह चाहे मानव के शरीर से हो या फिर किसी अन्य जीव-जन्तु, कीड़ी, हाथी, ब्रह्मा, तृण आदि जो कुछ भी पाँच तत्त्व निर्मित है उससे हो, दोनो ही त्याज्य है। अन्यथा मोह बद्ध आत्मा शरीर छोड़ने पर कर्मानुसार किसी न किसी अन्य शरीर में प्रवेश कर जाती है और अपने अस्तित्व में लीन नहीं हो पाती यानि प्रकाश नाल प्रकाश नहीं हो पाती क्योंकि उसे पाँच तत्त्वों से मोह जो होता है। अतः उसकी चाहत तो पूरी होगी ही होगी। उस हेतु चाहे उसे कीड़ी या हाथी ही क्यों न बनना पड़े। ऐसा न हो इस हेतु शरीर रूपी मोह से मुक्त होना आवश्यक है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों हम देखते हैं कि जब कोई इन्सान मृत्यु को प्राप्त होता है तो अधिकतर इंसान रोना-धोना शुरु कर देते हैं। सजनों हमें यह सब बन्द करना है और इससे ऊपर उठना है क्योंकि यह बुद्धि की मन्द-अधम अवस्था है। अतः मानो कि इस संसार में कर्मानुसार जीवों का जन्मना या मरना, सब कुदरती खेल है। इस खेल के तहत् किसी के मरने या जन्मने पर हम रोते या हँसते क्यों हैं? उस समय चाहिए कि हम सम रहें यानि शरीर आ गया तो ठीक है और यदि चला गया तो भी ठीक है। इस संदर्भ में सजनों विचार कर लो कि शरीर में ही रहना चाहते हो या परम-अवस्था को धारण करना चाहते हो?

ज्ञात हो कि सच्चेपातशाह जी ने जो चाहा वही प्राप्त हुआ इसलिए त्रिलोकी का राज उन्हें मिल गया यानि वह प्रकाश नाल प्रकाश हो गए और उनका कोई अलग अस्तित्व नहीं रहा। यह है परम आनन्द की बात। इस बात को समझते हुए सजनों एक-दूसरे को शरीर मत समझो अपितु वह आत्मा समझो जिसमें परमात्मा शोभित हैं। मानो सब में एकात्मा है अतः एकता मे आ जाओ। इस एकता में स्थिर बने रहने के लिए परस्पर सजनभाव का वर्त-वर्ताव करना ही होगा। इसी से अन्तर्घट का सत्य प्रगट होगा और पता चलेगा कि आप वाकई ही सजनता के प्रतीक हो।

इस परिप्रेक्ष्य में हम तो यही कह सकते हैं कि जब पाँच तत्त्व अपने घर जाते हैं और जीव का भार उतरता है यानि आत्मा आज़ाद हो जाती है और प्रकाश नाल प्रकाश हो जाती है तो वह खुशी का दिन होता है। रोने का दिन तो तब होता है जब जीवन में किए हुए पापकर्मों की वजह से आत्मा दूसरे शरीर में जाती है। वहाँ रोना बनता है और आज यही हो रहा है। इस सन्दर्भ में हम तो आप सबको यही कहेंगे व आग्रह करेंगे कि जब यह पाँच तत्त्व अपने घर जाएँ तो शहनाईयाँ बजाना। किसी को भी रोने की जरुरत नहीं है, इसके स्थान पर मँगलाचार मनाना। हम यह खुद कह रहे हैं। अतः हक़ीकत में ऐसा ही होना चाहिए। खबरदार किसी ने भी रोना किया तो, क्योंकि सबका शरीर समय में बन्धा हुआ है। अतः शहनाईयाँ बजाना, खुशी के गीत गाना क्योंकि सुरत अपने घर चली जाएगी।

इसके विपरीत अगर कोई शरीर में जाए तो वह तो निश्चित रूप से दुःखद होता ही है क्योंकि लगतर है कि मानव चोला प्राप्त होने पर भी इस मूर्ख ने क्या किया। उस समय सब उसकी मूर्खता पर रोते हैं। आपकी मूर्खता पर किसी को रोना न पड़े व घर में खुशियाँ मनाई जायें इस हेतु शरीर के मोह-बन्धन से आज़ाद हो जाना। अतः अभी से मजबूत हो जाना। चलो अब यज्ञ का बुलावा सुनोः-

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

जीवन यज्ञ निर्विघ्नता से सम्पन्न हो इस हेतुः-

आना जी, आना, आना, आना, आना,

यज्ञ उत्सव पर जरूर आना

साथ में सबको लाना

यह हमारा निमंत्रण है जी

यह हमारा निमंत्रण है जी

हँसते हँसते आना

यहाँ भी हँसते रहना

आपस में जब मिलो तो

सजन जी ही कहना

यहाँ सात्विक आहार मिलेगा

सात्विक ही विचार मिलेंगे

उन्हें ही धारण कर

सब सुखी हो जाना

गर अफुरता में रहे तो

जहाँ निगाह वहाँ दृष्टि करी तो

जो इलाही दर्शन होगा सामने

उसको देख सकोगे

ए विध्

अंततः हमारी प्रार्थना है कि

घरों के इंतजाम कर चार दिन ही आना है,

नहीं चलेगा कोई बहाना

वरना पड़ेगा पछोताना

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

सजनों नीति के अनुसार इस यज्ञ पर सब सजन बाहर से आते हैं। तो हमारा कर्त्तव्य बनता है कि जो निमन्त्रण आपने दिया है, उस पर सर्वप्रथम खुद खरे उतरें और अन्य जो भी सजन हैं उनको भी जागृति में लाएं व उन्हें भी चारों दिन यहाँ रहने की महत्ता बताएं। जाने इस बार चारों दिन विशेष कार्यक्रम होना है। इस कार्यक्रम द्वारा जो सजन मानसिक तौर पर अज्ञानमय अवस्था में सोए पड़े हैं, उन्हें सुधार का प्रयास किया जाना है ताकि निष्पाप स्वतन्त्रता से जीवन यापन करने हेतु उन्हें व सबको पता लग सके कि हम इस दुनियाँ में कैसे आये, किसने हमारी बनत बनाई और मानव रूप में कौन सी विशेष शक्ति कुदरत ने हमें प्रदान करके इस जगत में भेजा। यहाँ शक्ति से अभिप्राय विवेक शक्ति से है। अतः

जानो कि जिस कुदरत ने हमारी बनत बनाई है उसी कुदरत की सारी बात यज्ञ पर आपको यथार्थ में समझाई जायेगी। इसी के साथ यथार्थता से जीवन जीने के लिए जो विवेक शक्ति हमें मानव रूप में मिली हुई है उसको हर पहलू से परिचित कराया जायेगा। इस तरह जब आपकी बुद्धि तीक्ष्ण हो जाएगी और चित्त एकाग्र हो जाएगा तो आप यथार्थ दर्शन करने के काबिल बन जाओगे। फिर जो दो दिन प्रोग्राम होगा वह दर्शनार्थ होगा। अतः आप सबको बहुत ही सावधान व सतर्क होकर बैठना है। मन में कोई दूसरा ख़्याल न आने पाये ताकि कोई शब्द छूट न जाए क्योंकि एक भी शब्द का छूटना गड़बड़ कर देगा और सारा तारतम्य टूट जाएगा। सजनों आपका आना लाभप्रद हो और आपके जीवन में आपके माता-पिता के जीवन में, आपके बच्चों के जीवन में सुख भर जाए, इस हेतु पूरे चार दिन सपरिवार आना।

आप इस यज्ञ उत्सव का पूरा लाभ उठा सको इन्हीं शुभकामनाओं सहित।